नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

## लापरवाही की आग में झुलसती व्यवस्था

दिल्ली के मालवीय नगर स्थित फ्लोरिश स्टे 'बी एंड बी' होटल में लगी आग केवल एक दुर्घटना नहीं है, बल्कि यह उस सड़ चुकी प्रशासनिक व्यवस्था का भयावह चेहरा है, जो नियमों को कागजों में जीवित रखती है और जमीनी स्तर पर उन्हें मरने देती है. 22 लोगों की मौत, जिनमें विदेशी नागरिक भी शामिल हैं, किसी प्राकृतिक आपदा का परिणाम नहीं है. यह मानवीय लालच, सरकारी उदासीनता और नियामक संस्थाओं की विफलता से जन्मी त्रासदी है. सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जिस होटल को केवल छह कमरों की अनुमति थी, वह 25 से अधिक कमरों के साथ पांच मंजिलों तक कैसे संचालित होता रहा? उसके पास फायर एनओसी नहीं थी, आने-जाने का एक ही रास्ता था, वेंटिलेशन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी, फिर भी वह वर्षों से मेहमानों को ठहरा रहा था. क्या यह सब प्रशासन की नजरों से छिपा हुआ था? यदि नहीं, तो फिर जिम्मेदार अधिकारियों ने कार्रवाई क्यों नहीं की?

भारत में लगभग हर बड़ी दुर्घटना के बाद एक परिचित पटकथा सामने आती है. हादसा होता है, जानें जाती हैं, जांच के आदेश दिए जाते हैं, कुछ अधिकारियों को नोटिस जारी होते हैं, कुछ गिरफ्तारियां होती हैं और फिर समय के साथ सब कुछ भुला दिया जाता है. दिल्ली हाई कोर्ट ने इसी वर्ष जनवरी में फायर सेफ्टी को लेकर कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए थे. याचिका में यह तथ्य भी सामने आया था कि राजधानी के करीब एक हजार लाइसेंसी होटल और गेस्ट हाउस में से केवल 52 के पास वैध फायर एनओसी है. यदि यह जानकारी सरकार, नगर निकायों और फायर विभाग के पास पहले से थी, तो फिर कार्रवाई क्यों नहीं हुई?

दरअसल, हमारे यहां नियमों का उल्लंघन अपवाद नहीं, बल्कि व्यवस्था का हिस्सा बन चुका है. अवैध निर्माण तब तक चलता रहता है जब तक कोई हादसा न हो जाए. निरीक्षण तब तक नहीं होते जब तक अदालत हस्तक्षेप न करे. और जब दुर्घटना होती है तो जिम्मेदारी तय करने के बजाय दोष एक-दूसरे पर डालने का खेल शुरू हो जाता है. इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि भ्रष्टाचार और लापरवाही का गठजोड़ किसी भी आतंकी हमले से कम घातक नहीं होता. होटल मालिक ने नियम तोड़े, लेकिन उससे भी बड़ा अपराध उन अधिकारियों का है जिन्होंने इन उल्लंघनों को नजरअंदाज किया. यदि भवन का नक्शा स्वीकृत नहीं था, फायर एनओसी नहीं थी और सुरक्षा मानकों का पालन नहीं हो रहा था, तो संबंधित विभागों की जवाबदेही क्यों तय नहीं होनी चाहिए? इस त्रासदी में एक सकारात्मक पक्ष स्थानीय नागरिकों की संवेदनशीलता रही. अरमान जैसे दुकानदारों ने अपने गद्दे और रजाइयां सड़क पर बिछाकर लोगों की जान बचाने का प्रयास किया. कई युवकों ने अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों को बाहर निकाला और सीपीआर दी. यह बताता है कि समाज अभी भी जीवित है, लेकिन व्यवस्था लगातार असफल हो रही है. अब केवल होटल मालिक की गिरफ्तारी पर्याप्त नहीं है. जिन अधिकारियों की निगरानी में यह अवैध संचालन चलता रहा, उन्हें भी कठोर दंड मिलना चाहिए. यदि इस हादसे के बाद भी जवाबदेही तय नहीं हुई, तो यह मान लेना चाहिए कि अगली आग कहीं और लगेगी, कुछ और परिवार उजड़ेंगे और फिर वही शोक, वही जांच और वही विस्मृति का चक्र दोहराया जाएगा. ऐसी मौतें दुर्घटना नहीं, दरअसल व्यवस्था द्वारा की गई हत्याएं हैं.

# कृषि के लिए खाद्य प्रसंस्करण एक महत्वपूर्ण सेतु

चिराग पासवान

**दक्षिण** एशिया खाद्य प्रणालियों की अपनी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है. समृद्ध कृषि-जैव विविधता वाला एक प्रमुख क्षेत्र होने के बावजूद, खेत से उपभोक्ता तक पहुँचने की प्रक्रिया में अभी तक बहुत अधिक मूल्य नष्ट हो जाता है—जो किसानों, रोजगार और पोषण के लिए एक चूका हुआ अवसर है.

> इस परिवर्तन का मार्ग खाद्य प्रसंस्करण से होकर गुजरता है. खेतों से लेकर उद्यमों तक, और स्थानीय बाज़ारों से वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं तक—खाद्य प्रणालियों का यह रूपांतरण इस क्षेत्र के आर्थिक भविष्य को परिभाषित करेगा. नीति, निवेश और साझेदारी के सही संयोजन के साथ, दक्षिण एशिया खाद्य हानि से खाद्य नेतृत्व की ओर बढ़ सकता है .इसी भावना के साथ, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय अगले एसएपी एलआई एनजी उच्च-स्तरीय नीतिगत संवाद की मेज़बानी करने के लिए उत्सुक है, जो विश्व बैंक समूह सहित सरकारों, व्यवसायों और विकास साझेदारों को एक साथ लाया जाएगा, ताकि ऐसे समाधानों को आगे बढ़ाया जास के, जो रोजगार सृजित करें, निवेशको बढ़ा वादें और पूरे दक्षिण एशिया में अधिक मजबूत खाद्य प्रणालियाँ विकसित करें.

भारत इस विरोधाभास का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है. खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, भारत दूध और दालों का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक तथा फल और सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है. इसके बावजूद, कटाई के बाद की प्रक्रियाओं,भंडारण, लॉजिस्टिक्स और प्रसंस्करण में मौजूद कमियों के कारण खाद्य पदार्थों की बड़ी मात्रा में हानि होती रहती है. इससे सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी)सहित वैश्विक विकास प्राथमिकताओं की दिशा में होने वाली प्रगति प्रभावित होती है. यह केवल अक्षमता भर नहीं है, बल्कि चूका हुआ अवसर भी है. बर्बाद होने वाले खाद्य पदार्थों का प्रत्येक टन, किसानों की खोई हुई आमदनी, युवाओं के लिए खोए हुए रोजगार के अवसर और परिवारों के लिए खोए हुए पोषण का प्रतीक है. इसलिए, इस हानि को मूल्य में बदलना अब एक क्षेत्रीय प्राथमिकता बन जाना चाहिए. खाद्य प्रसंस्करण मूल्यवर्धित कृषि की संभावनाओं का पता लगाने की कुंजी है. यह खेतों को बाजारों से, किसानों को उद्योगों से तथा स्थानीय उत्पादन को क्षेत्रीय और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़ता है. इस प्रकार, यह कृषि और व्यापक आर्थिक परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है.

दशकों से कृषि नीतियों का मुख्य उद्देश्य उत्पादन बढ़ाना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना रहा है. इस प्रयास ने खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में लाभ दिलाएं हैं. लेकिन अब अगले चरण मेंमूल्य सृजन, रोजगार के अवसरों के सृजन, किसानों की आय में वृद्धिऔर पोषण संबंधी परिणाम बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए. भारत में,वर्तमान में कृषि उपज का केवल लगभग17 प्रतिशतहिस्सा ही प्रसंस्कृत किया जाता है. क्षेत्र की पूर्ण आर्थिक क्षमता का लाभ उठाने के लिए इस हिस्सेदारी को बढ़ाकर2030 तक लगभग 25 प्रतिशतकरना आवश्यक है. साथ ही, कटाई के बाद होने वाली खाद्य हानियों को कम करना और प्रसंस्करण से जुड़े तंत्रों को मजबूत बनाना भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगा, ताकि अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक मूल्य बनारहे. खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों कोभंडारण अवधि बढ़ाता है, खाद्य सुरक्षा में सुधार करता है तथा नए और घरेलू निर्यात बाजारों तक पहुँच के अवसर प्रदान करता है. इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आर्थिक मूल्य के बड़े हिस्से को उत्पादक देशों के भीतर ही बनाए रखने में मदद करता है, जिससे किसानों, उद्यमों और ग्रामीण समुदायों को प्रत्यक्ष लाभ मिलता है.

इस परिवर्तन को सफलतापूर्वक साकार करने के लिए मूल्य श्रृंखला के प्रत्येक चरण —उत्पादन और संग्रहण से लेकर प्रसंस्करण, लॉजिस्टिक्स और बाज़ार तक पहुँच सुनिश्चित करने में समन्वित निवेश की आवश्यकता होगी. गुणवत्ता, सुरक्षा, ट्रेसबिलिटी तथा लागत-प्रभावशीलता के प्रति उपभोक्ताओं की बदलती अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अधिक एकीकृत और समग्र दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य होगा.

दक्षिण एशिया की समृद्ध कृषि-जैव विविधता उच्च मूल्य वाले उत्पादों के विकास की अपार संभावनाएँ प्रदान करती है, विशेषकर ऐसे समय में जब वैश्विक मांग अधिक विविधतापूर्ण, पौष्टिक और विशिष्ट खाद्य उत्पादों की ओर बढ़ रही है. साथ ही, डिजिटल समाधान ट्रेसबिलिटी को मजबूत करने, गुणवत्ता मानकों में सुधार लाने और लगातार जटिल होते वैश्विक बाज़ारों में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. इसमें सार्वजनिक निवेश की महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन इसे निजी क्षेत्र की अधिक भागीदारी को भी प्रोत्साहित करना चाहिए. निवेश को बड़े पैमाने पर आकर्षित करने के लिए व्यावसायिक वातावरण को मजबूत बनाना, जोखिमों को कम करना तथा प्रभावीसार्वजनिक-निजी साझेदारीको बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक होगा.

**(लेखक केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री हैं)**

ग्रेट निकोबार भारत के लिए ऐसी ही एक बड़ी परीक्षा है

# ग्रेट निकोबार : भारत की समुद्री रणनीति का प्रमुख केंद्र

एडमिरल डीके जोशी

**जो** राज्य अपनी सीमाओं, साझेदारियों और व्यापार मार्गों की सुरक्षा नहीं करता, वह अपने भविष्य को भी सुरक्षित नहीं रख सकता.

**- कौटिल्य**

कौटिल्य की यह सीख सदियों पहले ही शासन और रणनीति की मूल सोच का हिस्सा बन चुकी थी, और आज के समय में यह पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक होकर सामने आई है. आज देशों की परीक्षा केवल उनकी अर्थव्यवस्था के आकार या सैन्य ताकत से नहीं हो रही, बल्कि इस बात से हो रही है कि वे भूगोल को कितनी अच्छी तरह समझते हैं, भविष्य का कितना सही अनुमान लगाते हैं और अवसर के खतरे में बदलने से पहले कितनी तेजी से निर्णय लेते हैं. ग्रेट निकोबार भारत के लिए ऐसी ही एक बड़ी परीक्षा है. यह भारतीय मानचित्र के दक्षिणी-पूर्वी छोर पर स्थित एक दूरस्थ द्वीप जैसा प्रतीत होता है. ऐसी जगह जिसे दशकों से लगभग अछूता छोड़ दिया गया है और जिसे वैसे ही रहने देना चाहिए. परंतु ग्रेट निकोबार भारत की अग्रिम समुद्री चौकी है.

> किसी राष्ट्र की नियति केवल उन खतरों से निर्धारित नहीं होती जिनका वह सामना करता है, बल्कि उन अवसरों से भी तय होती है जिन्हें वह समय रहते पहचान लेता है. ग्रेट निकोबार ऐसा ही एक अवसर है. इसकी उपेक्षा करना भूगोल की उस सामरिक शक्ति को अनुपयोगी छोड़ देना होगा, जिसे बाद में अन्य शक्तियाँ अपने अनुसार आकार दे सकती हैं. वहीं, इसका विवेकपूर्ण विकास भूगोल को राष्ट्रीय शक्ति में परिवर्तित कर सकता है. भारत को सामरिक दृष्टि से सोचने के लिए किसी से क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं है. उसे केवल उत्तरदायित?व पूर्वक, निर्णायक रूप से और स्पष्ट राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करने की आवश्यकता है. इंडो-पैसिफिक की इस शताब्दी में, ग्रेट निकोबार भारत का अंतिम छोर नहीं है,यह भविष्य के प्रवेश द्वार पर स्थित भारत का वॉचटावर है.

हिंद-प्रशांत क्षेत्र के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के समीप स्थित यह द्वीप दुनिया की ओर भारत की सबसे अहम सामरिकअवसर में से एक है.अत- ग्रेट निकोबार के प्रस्तावित विकास को केवल एक अवसंरचना परियोजना के रूप में नहीं देखा जा सकता. यह केवल एक बंदरगाह, हवाई अड्डा, टाउनशिप या बिजली संयंत्र बनाने का प्रश्न नहीं है. यह वास्तव में इस बात की सामरिक परीक्षा है कि क्या भारत अपनी इस दुर्लभ भौगोलिक बढ़त को राष्ट्रीय शक्ति में बदलने के लिए तैयार है.सदियों से हिंद महासागर ने भारत की नियति को आकार दिया है. इसी समुद्री क्षेत्र ने हमारे व्यापार, हमारे विचारों और हमारे सभ्यतागत प्रभाव को विश्व भर में पहुंचाया, परन्तु कई बार यही हमारी कमजोरियों का कारण भी बना. तथापि, स्वतंत्रता के पश्चात् लंबे समय तक भारत की सामरिक सोच मुख्य रूप से स?थल-आधारित रही.यह निर्विवाद है कि ग्रेट निकोबार अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक स्थान है. यह अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 910 वर्ग किलोमीटर है. प्रस्तावित परियोजना का कुल क्षेत्रफल 166.10 वर्ग किलोमीटर है, जो सम्पूर्ण द्वीपसमूह के कुल क्षेत्रफल का केवल लगभग 2 प्रतिशत है. इसमें से 130.75 वर्ग किलोमीटर वन भूमि को परियोजना के लिए उपयोग में लाने का प्रस्ताव है, जो द्वीप समूह के कुल वन क्षेत्र का लगभग 1.82 प्रतिशत है.यह दक्षिण-पूर्व एशिया के निकट स्थित है तथा मलक्का स्ट्रेट, 60चैनल, सुंडा स्ट्रेट और लोम्बोक स्ट्रेट जैसे प्रमुख वैश्विक समुद्री मार्गों के समीप आता है. वास्तविक सामरिक दृष्टि से देखें तो यह भारत की पूर्वी समुद्री चौकी है.इसका महत्व तब और स्पष्ट हो जाता है जब इसे केवल भूभाग के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि महासागरीय रणनीति के व्यापक परिप्रेक्ष्य से देखा जाए.

कल्पना कीजिए उन जहाजों की, जो अदन की खाड़ी से मलक्का स्ट्रेट की ओर बढ़ रहे हैं,ऊर्जा से भरे मालवाहक जहाज, जो पश्चिम एशिया और अफ्रीका से पूर्वी एशिया की ओर जा रहे हैं,एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने वाला कंटेनर यातायाततथा नौसैनिक संसाधन, निगरानी मंच और लॉजिस्टिक श्रृंखलाएँ, जो इन जलमार्गों से होकर गुजर रही हैं.हिंद महासागर अब शांत समुद्र नहीं रहा. यह तेजी से एक भीड़भाड़ वाले सामरिक क्षेत्र में बदल रहा है. ऊर्जा आपूर्ति, कंटेनर यातायात, नौसैनिक तैनाती, द्वीपीय सुविधाएं, समुद्र के नीचे बिछी केबलें और समुद्री निगरानी अब एक ब?ी वैश्विक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन चुकी हैं. यह शायद मुख्य भूमि पर बैठे कई लोगों को दिखाई न दे, परन्तु देशों के भविष्य के लिए यह बेहद निर्णायक है.हाल की एक महत्वपूर्ण प्रगति यह है कि अंडमान सागर को थाईलैंड की खाड़ी से जोड़ने वाली दशकों पुरानी कैनल परियोजना को स्थगित कर दिया गया है.

**(लेखक वर्तमान में अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के उपराज्यपाल तथा द्वीप विकास एजेंसी के उपाध्यक्ष हैं. वे भारतीय नौसेना के पूर्व नौसेना प्रमुख रह चुके हैं और वर्ष 2009-10 के दौरान अंडमान तथा निकोबार कमान के कमांडर-इन-चीफ भी रहे हैं.)**

# अब प्लास्टिक के नोटों का विचार

**पिछले** कुछ वर्षों में 10 व 20 रुपए के नोटों की मांग में वृद्धि हुई है. नोट छपाई का खर्च भी बढ़ता जा रहा है. क्योंकि कागज के नोट बार-बार फोल्ड करने और अस्वच्छ हाथों से गुजरने से जर्जर और मैले-कुचैले होकर फट जाते हैं. उन्हें फिर छापना पड़ता है. पानी में भीगने से भी नोट खराब हो जाते हैं. इसलिए इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर के समान प्लास्टिक के नोट जारी करने का प्रस्ताव विचाराधीन है. कहा जा रहा है कि प्लास्टिक के नोट एटीएम के लिए भी अनुकूल और काफी टिकाऊ होते हैं. सिक्कों के आकार को लेकर भी लोग परेशान हुआ करते हैं. 10 और 20 रुपए के सिक्के का आकार समान है. ऐसे ही 1 रुपए और 2 रुपए का सिक्का बराबर आकार का है. इससे लेन-देन में गड़बड़ी होने की संभावना बनी रहती है. सिक्कों में भुगतान कोई पसंद भी नहीं करता. यह जेब पर बोझ बन जाते हैं. विगत वर्षों से 1, 2 व 5 रुपए के नोट दिखाई ही नहीं देते. इसलिए सबसे छोटा नोट 10 रुपए का रह गया है. नोटबंदी के समय चलन में नकद रकम केवल 17,97,000 करोड़ रुपए थी जो अब बढ़कर डेढ़ गुनी हो गई है. डिजिटल पेमेंट बढ़ने के बावजूद नकद रकम का चलन कम नहीं हुआ है. नकदी चलन को रोकने के प्रयासों को सफलता नहीं मिल पा रही है. प्रति वर्ष नकद रकम का सर्कुलेशन 11 .5 प्रतिशत बढ़ जाता है. छोटे भुगतान के लिए लोग अब भी नकद रकम मांगते हैं. रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार गत वर्ष सिर्फ नोट छापने पर लगभग 5 करोड़ रुपए खर्च हुए. गत वर्ष 2,300 करोड़ रुपए के फटे नोट बैंकों में जमा हुए. इससे नोटों के कागज की गुणवत्ता पर संदेह होता है. महंगाई की वजह से मुद्रा की मांग बढ़ जाती है और सरकार को अधिक नोट छपवाने पड़ते हैं.

*कहा जा रहा है कि प्लास्टिक के नोट एटीएम के लिए भी अनुकूल और काफी टिकाऊ होते हैं. सिक्कों के आकार को लेकर भी लोग परेशान हुआ करते हैं. 10 और 20 रुपए के सिक्के का आकार समान है. ऐसे ही 1 रुपए और 2 रुपए का सिक्का बराबर आकार का है. इससे लेन-देन में गड़बड़ी होने की संभावना बनी रहती है.*

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

# अपने नाम की बड़ी कीमत कोई तो समझे इसकी अहमियत

**पड़ोसी** ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर के मामले में चुनाव आयोग को क्लीन चिट दे दी लेकिन बंगाल के लाखों मतदाताओं की जबान पर सवाल है कि मेरा नाम कहां है? महाराष्ट्र में लाडकी बहीण योजना से भी अपात्र महिलाओं के नाम हटाए जा सकते हैं.'

हमने कहा, 'शेक्सपियर ने कहा था कि व्हॉट इज इन ए नेम अर्थात नाम में क्या रखा है. नाम तो सिर्फ पहचान के लिए रहता है. जेल में कैदी को नाम से नहीं, नंबर से पुकारते हैं. परीक्षार्थी का रोल नंबर ही उसकी पहचान होता है. नंबर को महत्व देते हुए गाना लिखा गया था ये दुनिया एक नंबरी तो मैं हूं दस नंबरी!'

पड़ोसी ने कहा 'निशानेबाज, नाम की वजह से ही कोई नामवर होता है तो कोई बदनाम. कलियुग में भगवान का नाम स्मरण ही एकमात्र आधार है. प्रसिध्द लोगों को उर्दू में नामचीन हस्ती कहते हैं.

नाम रखने के लिए बाकायदा नामकरण संस्कार किया जाता है. बंगाल में शिशुजन्म पर घर की बुजुर्ग महिला उनका जन्म नाम रखती है, जो डाक नाम या घरेलू बोलचाल का नाम रहता है. उसका बाहर प्रचलित अधिकृत नाम भालो नाम कहलाता है. इस मुद्दे को लेकर झुंपा लाहिड़ी ने 'द नेमसेक' नामक रोचक उपन्यास लिखा. इस पर फिल्म भी बन चुकी है. जेम्स बॉन्ड की फिल्मों में भी हीरो खुद का नाम बताता है - माय नेम इज बॉन्ड, जेम्स बॉन्ड! आपने देवआनंद की फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' देखी होगी. हीरोईन भी गाते हुए अपना नाम बताती है मेरा नाम है चमेली, मैं हूं मालन अलबेली, चली आई हूं अकेली बीकानेर से!'

हमने कहा, 'महाराष्ट्र में उम्र के साथ नाम का विकास होता चला जाता है. बच्चे को बाळा या बाल्या कहते हैं. बड़ा होकर वह बालासाहेब कहलाने लग जाता है. राजकपूर ने 'जिस देश में गंगा बहती है' फिल्म में गाया था मेरा नाम राजू, घराना, अनाम, बहती है गंगा जहां, मेरा धाम! अमिर खान की फिल्म में गाना था- पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा, बेटा हमारा ऐसा काम करेगा!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

## CROSS WORD 12279

- डॉ. सागर खादीवाला

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | | 2 | | | 3 | | 4 |
| 5 | 6 | | | | 7 | 8 | |
| 9 | | | 10 | | | 11 | |
| | 12 | 13 | | | 14 | | |
| | | | | 15 | | 16 | |
| 17 | 18 | | 19 | | | 20 | 21 |
| 22 | | 23 | | | 24 | | |
| | | 25 | | | | | |

(महाभारत)

**ऊपर से नीचे**

1. शक्ति, सामर्थ्य 2. पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह 3. पर्यन्त, सीमा सूचित करने वाली एक विभक्ति 4. अर्क, खमीर छानकर बनाई हुई औषधि (सं.) 6. बहुत से लोगों का एक जगह पर जमाव, जमघट (उर्दू) 8. श्वेत रंग की एक प्रसिद्ध चमकदार तरल धातु 10. ऊधम, तैयारी के साथ किए जाने वाले किसी बड़े काम या उत्सव का हल्ला-गुल्ला 13. निर्जन, एकांत, जहां कोई न हो 14. छाया 15. फंदा (सं.) 16. सेंध 17. कमल, कीचड़ में उत्पन्न होने वाला 18. शीतकाल, सर्दी 21. माथा, भाल, मस्तक 23. एक आंख का, एकाक्ष 24. अज्ञानी, मूर्ख (सं.)

**बाएं से दाएं**

2. जिसका परिचय हो चुका हो 5. अपना समझने का भाव, स्नेह, मोह 7. बिनौलों सहित रुई, रुई का पौधा 9. राजमुकुट 10. सूर्यप्रकाश, सुगंध के लिए गंध द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआं 11. राजा, सरदार 12. अपराध या दोष रहित, बेगुनाह 15. पवित्र या शुद्ध करने वाला 17. उंगलियों और हथेली का संपुट 19. खेलने के काम का मोटे कागज का चौकोर टुकड़ा जिस पर बूटियां या तस्वीर होती है 20. बीता हुआ या आने वाला दिन 22. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द, उपवास 24. स्त्री, औरत 25. एक यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों का पूर्ण विनाश किया था

**Solution 12278**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि | रा | मि | ष | | वि | रा | ग |
| र्धा | | रा | | पु | नी | त | |
| र | वा | न | गी | | त | रा | श |
| ण | | री | | दु | | नी | र |
| | द | | सा | म | र्थ्य | | ण |
| वि | शा | ला | क्षी | | | सं | |
| फ | | | दा | रा | शि | को | ह |
| ल | ल | का | र | | प्रा | ची | र |

## ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वर्ष के मध्य में तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्य क्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना पडेंगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को धन संकट का सामना करना पडेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक परेशानी आ सकती है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गौरवर्ण का दुबला पतला लंबे कद का प्रभावशाली होगा, माता पिता का आदर करेगा, नौकरी और व्यापार दोनों में अच्छी तरक्की करेगा, विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा होगी, दूसरों की मदद करेगा.

**मेष**- धार्मिक गतिविधियों में रूझान बढेगी, दान धर्म में धन खर्च होगा, पुसिंह योजनायें फ्लीभूल होंगी, लाभदायक अवसर मिलेगा, संतान की चिन्ता दूर होगी.

**वृषभ**- संपत्ति के मामले अभी विचाराधीन रखें, तो ज्यादा ठीक रहेगा, मन प्रसन्न रहेगा, शुभ समाचारों का संचार होगा, पुराने मित्र मिलेंगे.

**मिथुन**- परिश्रम की मात्रा में लाभ कम होगा, उच्चाधिकारियों से तनाव की संभावना है, सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, अतिथि आगमन होगा.

**कर्क**- व्यवसाय में किसी नये प्रस्ताव को स्वीकार करना होगा, अंतरंग मित्र बनेंगे, शुभ समाचार मिलेगा, नये उत्तरदायित्वों की प्राप्ति होगी.

**सिंह**- मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, श्रम की मात्रा अधिक होगी, पुसिंह मित्रता उपयोगी रहेगी, लालच न करें, आपसी बात को महत्व मिलेगा.

**कन्या**- खानपान का विशेष ध्यान रखें, धर्म कर्म आध्यात्म में रूचि बढ़ेगी, धार्मिक यात्रा होगी, जोड़तोड़ करना पड़ेगा, निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

**तुला**- अप्रत्याशित खर्चो के कारण संकट पैदा हो सकता है, जिसके कारण मानसिक तनाव रहेगा, आजीविका के प्रयासों में सफ्लता मिलने का योग है.

**वृश्चिक**- पद के अनुरूप कार्यप्रणाली लाभदायक रहेगी, अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह होगा, वाद विवाद का भय रहेगा, बनते हुये कार्यो को अवरोध का सामना करना होगा.

**धनु**- मित्रों के साथ मेल मिलाप बढ़ेगा, मनोरंजन में समय अधिक व्यतीत होगा, भागदौड़ करना पड़ेगी, मनोवांछित सफ्लता मिलने का योग है.

**मकर**- मन में किसी अज्ञात भय की स्थिति बनेगी, नये व्यापार पर गंभीरता से विचार होगा, समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें, अधिनस्थों से विरोध हो सकता है.

**कुम्भ**- कार्यस्थल में अधिकारियों से सामंजस्य बनाना पड़ेगा, यश मिलेगा, मांगलिक कार्य बनेंगे, अनजान व्यक्ति पर भरोसा न करें, अन्यथा नुकसान हो सकता है.

**मीन**- अचानक किसी महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिये तैयार रहें, लाभ की अपेक्षा हानि हो सकती है, धैर्य से लाभ होगा, अधिकारी वर्ग आपकी मदद करेंगे.

### उदयकालीन ग्रह चाल

### पंचांग

रा.मि. 15 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं भृगुवासरे रात 9/29, श्रवण नक्षत्रे रात 2/56, ब्रह्म योगे दिन 7/43, कौलव करणे सू.उ. 5/15, सू.अ. 6/45, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3,5, 9.

### व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में मंदी होगी, चना, जवार, के भाव में मंदी का योग है, कपास के भाव में समता रहेगी, तिल, तेल, सरसों, आदि में मंदी की चाल चलेगी. भाग्यांक 1310 है.

## SUDOKU 7411

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 4 | | | | 3 | |
| | | 6 | | 2 | | 4 | | |
| | | 8 | | | 5 | | | |
| | 3 | | | | | | 7 | |
| 7 | | | | 4 | | | | 9 |
| | 9 | | | | | | 5 | |
| | | | 2 | | | 1 | | |
| | | 1 | | 7 | | 6 | | |
| | 5 | | | | 3 | | | |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

**नवभारत सू-डोकू 7410**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 8 | 5 | 4 | 2 | 9 | 6 | 3 | 1 |
| 3 | 6 | 4 | 1 | 5 | 7 | 8 | 9 | 2 |
| 9 | 2 | 1 | 6 | 3 | 8 | 7 | 4 | 5 |
| 6 | 5 | 3 | 2 | 8 | 4 | 9 | 1 | 7 |
| 1 | 7 | 2 | 3 | 9 | 6 | 4 | 5 | 8 |
| 4 | 9 | 8 | 7 | 1 | 5 | 2 | 6 | 3 |
| 2 | 4 | 7 | 5 | 6 | 1 | 3 | 8 | 9 |
| 5 | 3 | 9 | 8 | 4 | 2 | 1 | 7 | 6 |
| 8 | 1 | 6 | 9 | 7 | 3 | 5 | 2 | 4 |